



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-

जयश्री पालीवाल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...



लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - जयश्री पालीवाल

करेले की बेल — जीवन का संदेश



करेले की बेल — जीवन का संदेश

मेरे घर के सामने सड़क किनारे एक कांटेदार पेड़ है — जो अनचाहा-सा है, पर पता नहीं कब से वहाँ उगा हुआ है। न उससे कोई तकलीफ़ है, न कोई काम, इसलिए कभी उस पर ध्यान भी नहीं गया।

लेकिन कल जब उसी पेड़ से लिपटी एक करेले की बेल देखी, और उस पर करेले देखे तो नजर ठहर गई।

सोचा — “ये यहाँ कैसे?”

बड़ी मशक्कत से मैंने अपनी छत पर टेरेस गार्डन बनाया था। कुछ गमलों में लौकी, भिंडी और करेले के बीज लगाए थे।

कुछ समय में बेलें तो चल निकलीं, दो-तीन छोटे करेले भी उगे, लेकिन न बड़े हुए, न टिके — बेल पर ही पककर मुरझा गए।

मैं सोचती रही, ये क्यों नहीं पनप पाए?

आज जब सड़क किनारे उस कांटेदार पेड़ पर करेले की बेल पर इतने सुंदर, योग्य करेले देखे, तो मन विचारों से भर गया।

यह वही जगह थी जहाँ हम रोज़ सब्जियों के छिलके गायों के लिए फेंक देते थे।

विचारों की अनगिनत श्रृंखलाएँ मन में उठने लगीं —

क्यों करेले ने यहाँ पनपने का साहस कर लिया, जहाँ उसे न पानी दिया गया, न खाद, न ही किसी ने ध्यान दिया कि उसे क्या चाहिए।

फिर भी यह बेल यहाँ फल-फूल गई।

शायद यह उन बीजों की पनपने की इच्छा थी, उनका जीवट, जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी उन्हें जड़ पकड़ने दी।

टैरिस गार्डन वाली बेलों के लिए मैंने क्या नहीं किया — कीटनाशक छिड़के, खाद डाली,

पानी मापा, हर जानकारी जुटाई —

पर वे नहीं चलीं।

तब एहसास हुआ कि उनके न फलने का कारण मेरी देखभाल नहीं, बल्कि उनकी इच्छा का अभाव था।

शायद वे वहीं नहीं पनपना चाहती थीं, या शायद मैंने अपनी सारी जानकारियाँ उन पर ऐसे थोप दीं जैसे मुझे ही सब पता हो।

और आज जब सड़क किनारे करेले की बेल मुझे मानो चिढ़ा रही थी, तब समझ आया कि मेरी जानकारी उतनी ही सीमित थी, जितना उनका वहाँ फलने का मन।

आज इस करेले की बेल ने जीवन का एक नया अध्याय पढ़ा दिया —

फलने और आगे बढ़ने के लिए कुछ भी जरूरी नहीं होता, सिवाय खुद की आत्म-इच्छा के।

अभावों और असुविधाओं की शिकायतें केवल मन को बहलाने के बहाने हैं —

अपनी असफलताओं को परिस्थितियों के जिम्मे डाल देना सबसे आसान होता है।

पर यदि मन में जीतने का पक्का इरादा हो, तो कांटेदार पेड़ों — यानी विपरीत परिस्थितियों — का सहारा लेकर भी अपनी पहचान बनाई जा सकती है।

और फिर, हर राहगीर उस करेले की बेल की ओर आकर्षित नहीं होता; आकर्षित वही होता है जिसे उसके गुणों का पता हो —

क्योंकि करेले के गुण ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

अंततः, मन की प्रबल इच्छा से

नकारात्मकता की चादर ओढ़े काँटों के बीच से निकलकर

सकारात्मकता, परोपकार और जीवटता से भरा जीवन जिया जा सकता है।

और प्रकृति इतनी सुंदर, सरल ,और सौम्य है , की इसकी गोद में निश्चय ही विजय ही जन्म लेती है ।

दो बारी सुंदर करेले तोड़ कर जब घरेलू सहायिका को दिए गए तब कही ओट से मुस्काते करेले जैसे कह रहे थे इन्हीं के लिए तो पनपने का साहस आ जाता है ।

और फिर दूसरी तरफ देखा छोटे छोटे हरे लाल टमाटर भी करेले के साहस को देखकर टिमटिमाने लगे थे ।

- जयश्री पालीवाल



लेखक परिचय

नाम – जयश्री पालीवाल





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ..... **जयश्री पालीवाल**जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

